पाठ :

बादल राग

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

जीवन परिचय ⇒

महाप्राण कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 1899 में बंगाल राज्य के महिषादल नामक रियासत के मेदिनीपुर जिले में हुआ था इनके पिता रामसहाय त्रिपाठी मूलतः उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला नामक गाँव के निवासी थे। 15 वर्ष की आयु में इनका विवाह मनोहरा देवी से हुआ इनका एक पुत्र व एक पुत्री थी। सन् 1918 में इनकी पत्नी का देहांत हो गया जिसका इनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। 1935 में इनकी पुत्री सरोज का निधन हो गया। इसके बाद वे पूरी तरह से टूट गए। तथा उनका शरीर अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो गया। 15 अक्टूबर 1961 में इस महान साहित्यकार ने सदा के लिए अपनी आँखे बंद कर लीं।

प्रमुख रचनाएँ ⇒

परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास, अणिमा, कुकुरमुत्ता, बेला, अर्चना, आराधना आदि।

साहित्यिक विशेषताएँ ⇒

निराला ने काव्य लेखन के साथ-साथ गद्य लेखन पर भी समान अधिकार रखा उनकी प्रतिभा के दर्शन उनकी सभी प्रकार की रचनाओं जैसे- काव्य, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना आदि में होते हैं।

भाषा शैली ⇒

निराला जी ने शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली को ही अपनी काव्य भाषा बनाया। उनकी भाषा पर संस्कृत बांग्ला व फारसी का श्रेष्ठ प्रभाव है। उन्होंने हिंदी साहित्य रचना में मुक्त छंदों का भी प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान ⇒

हिंदी साहित्य के छायावादी कवियों में युगों-युगों तक स्मरणीय रहेगा।

प्रश्न : 1 अस्थिर सुख पर दुख की छाया कि पंक्ति में दुख की की छाया किसे कहा गया है और क्यों ?

उत्तर : 1 कवि ने दुख की छाया मानव जीवन में आने वाले दुखों कष्टों को कहा है। कवि का मानना है, कि संसार में सुख कभी स्थायी नहीं होता उसके साथ-साथ दुख का भी प्रभाव रहता है। धनी व्यक्ति शोषण करके बहुत संपत्ती जमा करता है, परंतु उसे सदैव क्रांति की आशंका रहती है। वह सबकुछ छिनने के डर से भयभीत रहता है।

प्रश्न : 2 अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर : 2 इस पंक्ति में कवि ने पूंजीपति या शोषक या धनिक वर्ग की ओर संकेत किया है। बिजली गिरने का तात्पर्य क्रांति से है। क्रांति से जो विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग हैं,

उसकी प्रभु-सत्ता समाप्त हो जाती है और वह उन्नती के शिखर से गिर जाता है। उसका गर्व चूर-चूर हो जाता है।

प्रश्नः 3 विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते पंक्ति में विप्लव-रव से क्या तात्पर्य है? छोटे ही हैं शोभा पाते ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तरः 3 विप्लव-रव से तात्पर्य है, क्रांति गर्जन। जब-जब क्रांति होती है, तब-तब शोषक वर्ग या सत्ताधारी वर्ग के सिंहासन डोल जाते हैं उनकी संपत्ती प्रभुसत्ता आदि समाप्त हो जाती है। कवि ने कहा है, कि क्रांति के छोटे ही बादल शोभा पाते हैं। यहाँ छोटे बादल से तात्पर्य आम आदमी से है। आम आदमी ही शोषण का शिकार होता है। उसका छिनता कुछ नहीं है, अपितु उसे कुछ अधिकार मिलते हैं। और उसका शोषण समाप्त हो जाता है।

प्रश्नः 4 बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?

उत्तरः 4 बादलों के आगमन से प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं—

1. बादल गर्जन करते हुए मुसलाधार वर्षा करते हैं।
2. प्रकृति से पौधों का अंकुरण होने लगता है।

3. मूसलाधार वर्षा होती है।

4. बिजली चमकती है तथा उसके गिरने से पर्वत शिखर टूटते हैं। हव

5. हवा चलने से छोटे-छोटे पौधे हाथ हिलाते प्रतीत होते हैं।

6. गर्मी के कारण दुखी प्राणी बादलों के देखकर प्रसन्न हो जाते हैं।

26/9/23